मथुरादास की डायरी • मुद्राराक्षस

जगतराम एण्ड सन्स
मेन बाज़ार, गांधी नगर, दिल्ली-110031

© मुद्राराक्षस

प्रकाशक

जगतराम एण्ड संस
IX/221, मेन बाजार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण

1992

मूल्य

पचास रुपये

मुद्रक

अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MATHURADAS KI DIARY (Humour & Stire)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अनुक्रम

परनिंदा सुख उर्फ एरिस्ट्रोक्रेट झाड़ू	7
पुरस्कार प्रसंग	10
सावधान ! आगे जनवादी रेजीमेंट है	14
अध्यक्षता का आनन्द	19
अथ श्री दिल्ली पुलिस पुराणम्	23
काशी विश्वनाथ : शासकीय नियमावली	27
विधायक बिकाऊ हैं···!	32
आलोचना के खतरे	37
ऋणंकृत्वा चर्बी पिवेत	41
पड़ता सिद्धान्त	46
चुनाव चक्र और एकता	51
उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान	55
व्यंग्यकार की मेख	59
गरीबी की रेखा के इधर और उधर	64
समीक्षा सुख	68
टेढ़ा उल्लू	72
बड़ा क्या है : सच्चा सुख या सत्ता सुख	77
हिन्दी की शुभचिन्तक	82
ब्लैड युग की साहित्यिक हरकतें	87
बड़े बनने का गुर !	91
भारत भवन से मथुरादास की अपील	96
कम्प्यूटर क्रान्ति	101
उपदेशक की जमीन	105

थैले में डालकर प्रकाशक के चक्कर काटते थे। आलोचना पड़ता नहीं खाती। इसमें पकड़े जाने का डर भी होता है। आप किसी भक्त को पकड़िए और उसके टेपरिकार्डर से थूथन भिड़ाकर बोलना शुरू कर दीजिए। बोलते जाइए। जहाँ टेप खत्म हो जाए आप भी रुक जाइए। इसमें मेहनत कम पड़ती है और लेखन के सारे सुख उपलब्ध होते हैं। मौका आये तो आप बड़ी मासूमियत से खैनी खाते हुए (यह जिक्र उनका नहीं है भाई) कह सकते हैं —मैंने जो कहा उसका यह मतलब नहीं था।

यह पड़ता खाएगा।

चुनाव चक्र और एकता

चुनाव की सुहानी बयार बहने लगी है। मौसम बदलता है तो खाल पर नचुनी होने लगती है यानी खारिश-सी होती है। खारिश का मजा खूद खारिश है। खारिश की दवा कर लो तो सारा मजा जाता रहता है। चुनाव में यही होता है। खारिश होती है और विरोधी दल बगलें खुजाते हैं। कभी-कभी एक-दूसरे को भी खुजाते हैं। खुजाने वाला अगर जगजीवन राम हुआ तो वह अपनी खाज न तो खुद खुजाता है न दूसरे को खुजाने देता है। किसी वीराने में पेड़ के तने पर पीठ रगड़ता है। अगर अटलबिहारी बाजपेयी हुआ तो अपनी खारिश पर तो दवा चुपड़ता है और दूसरों की खाज पर नाखून। हेमवतीनन्दन बहुगुणा खुजाते अपनी बगल हैं और चाहते हैं मजा दूसरे को आए।

राजनारायण विचित्र चीज हैं। वे तो आपकी पीठ पर खजोहण रगड़ देंगे फिर घी की कटोरी के लिए भाग-दौड़ शुरू कर देंगे।

चौधरी चरणसिंह को खुद खुजली कभी नहीं होती। वे खुद दूसरों को हो जाते हैं। इसके बाद वे चाहते हैं कि लोग खुजाएँ उनकी ही पीठ, अपनी पीठ भगवान् भरोसे छोड़ दें।

तो भाई, चुनाव तो आ गया और चुनाव की खारिश भी जोरों पर है। अब सवाल यह है कि अगर विरोधी दलों में एका न हुआ तो इन्दिरा गांधी चुनाव जीत जाएँगी। और वे चुनाव जीत गईं तो खाज का सारा सुखा मिट्टी हो जाएगा।

हमें उम्मीद थी कि एका अब हो ही जाएगा। राजनारायण के सुधर जाने के बाद इसमें कसर ही क्या रह गई थी? मगर लगता है बिगड़े हुए अकेले राजनारायण ही नहीं थे। विरोधी दल का हर नेता एक किस्म का राजनारायण था।

बहुत दिन सोच-विचार हुआ। बहुत लोगों ने बहुत-सा सोच-विचार किया। इस सारे सोच-विचार के बाद सारे लोग एक बुद्धिमत्तापूर्ण और अहम नतीजे को निकालने में कामयाब हो गए—विरोधी दलों के बीच एका होना चाहिए।

यह देश सचमुच बहुत महान् है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि और ज्ञानी यहाँ हुए हैं। उन्होंने छोटे-छोटे सूत्रों में बड़े-बड़े दर्शन की बातें कही हैं। उनकी परम्परा और आगे बढ़ चुकी है यह विश्वास हमें हो गया। सांख्यकार ने सौ-दो सौ सूत्रों में आत्मा, परमात्मा और सृष्टि का रहस्य लिखा। विरोधी दलों के कणादों ने एक सूत्र में भारत का भविष्य लिख दिया—एक होना चाहिए।

कणाद ऋषि फलसफा लिखते थे और खेत में गिरे दाने चुनकर खाते थे। विरोधी दलों के नेता भी कणाद हैं। दाने चुगते हैं। दाने पड़े मिल जाएँ चुग लेंगे। खुद खेत कभी नहीं बोएँगे। हल चलाना हो तो हल हाथ से थामेंगे, मूठ खेत में रगड़ेंगे और कहेंगे अधिनायकवाद किसानों का दुश्मन है। इसलिए वे खेत अपना नहीं बोते। बोए हुए खेत में उतरते हैं और दाना चुगकर उड़ने लगते हैं। दाना उन्होंने चुग लिया। अब उड़ रहे हैं। उड़ रहे हैं और देख रहे हैं इधर-उधर कहीं चुनाव का कोई सुराग मिले।

तो सूत्र मिल गया—एका होना चाहिए।

एका नहीं होगा तो चुनाव में हार जाएँगे। चुनाव में हार जाने पर बड़ा नुकसान होता है। जनता का नहीं अपना। जनता राजनारायण के बिना काम चला लेगी, लेकिन चौधरी का काम कुर्सी के बिना नहीं चलता। इसी-लिए एका होना चाहिए।

अब सवाल है कि एका हो कैसे? इसके लिए सभी बुद्धिमान विरोधी दलों के विद्वान् नेताओं का गम्भीर विचार-विमर्श हुआ और फिर एक सूत्र निकला, एका मुद्दों पर होना चाहिए।

यह बड़े पते की बात है। एकता मुद्दों पर ही होनी चाहिए। पर मुद्दे कौन-से? मथुरादास का सुझाव है कि मुद्दा भी एक ही होना चाहिए—अध्यक्षता।

इस सूत्र से विरोधी नेता भारी कसरत करते हैं। इस एक सूत्र के भाष्य

पर ही दस पार्टियों के बीस दल बन जाते हैं और फिर नये सिरे से एकता-वार्त्ता शुरू होती है।

अपनी पूरी मासूमियत के साथ यह मुद्दा उठाया जाता है और अध्यक्षता के लिए दूसरों को कुएँ में धकेलकर जबरदस्ती कुर्सी पर जा बैठने की ताक लगाये रहने वाला नेता भी कहता है—अध्यक्षता को एकता में बाधा मत बनाओ।

इसका मतलब होता है—मुझे अध्यक्ष बनाओ और एकता करा लो। तुम अपनी तरफ से इसे शर्त न बनाओ।

ऐसे भी होता है कि कभी-कभी लोग इस चक्र में नहीं आते और भोंदू बने रहते हैं। कहते हैं—एकता कर लो, अध्यक्ष भी बन जाओ। ऐसे उदाहरण के बारे में संदिग्ध हो उठना फर्ज हो जाता है। तब नेता तो इस प्रस्ताव का स्वागत करता है पर उपनेता से इसके विरुद्ध बयान दिलवा देता है।

आखिर यह चक्कर क्या है? एकता, अध्यक्षता, चुनाव, बयान, इस सबके पीछे चक्कर है क्या? मथुरादास को यह बात अब समझ में आ रही है। मथुरादास ने अपने पड़ोसी का संवाद सुना तो उनके ज्ञान का फाटक खुल गया। पड़ोसी अपने बेटे के भविष्य को लेकर चिन्तित था। पड़ोसी अफीम की तस्करी करता था और उसका बेटा चूँकि चौड़ी मोहरी की पतलून पहनता था, धोती नहीं, इसलिए हशिश की तस्करी करना चाहता था। पड़ोसी बेटे को समझाता हुआ बोला, "बेटा, मैं चाहता हूँ तुम कोई नेक धंधा करो। नेता बन जाओ क्योंकि डकैत बन्दूकें लेकर जितना नहीं लूट सकता, नेता एक अदद कुर्ता-पायजामा पहनकर उससे कहीं ज्यादा सम्पत्ति बना सकता है। फिर तस्कर होगे तो पकड़े भी जा सकते हो। नेता होगे, तो लोग लुटकर भी अपने को अहोभाग्य मानेंगे।"

अब देखिए, चुनाव होता है तो दस-पाँच लाख तो अब विश्वविद्यालय की छात्र-यूनियन का उम्मीदवार ही खर्च कर लेता है। विधानसभा या लोकसभा के चुनाव में यह भोजन नहीं नमक-भर है। कितनी मजेदार बात है कि आदमी बीस-पच्चीस लाख रुपया चुनाव में खर्चे करता है सिर्फ जन-सेवा के लिए। कभी-कभी तो उसका मौका भी नहीं आता। पूरे साल पिछली सीट पर ऊँघकर दिन काट देता है नेता।

मथुरादास को विश्वास है कि सिर्फ ऊधने का सुख पाने के लिए पचास लाख रुपया खर्च नहीं करेगा। तो फिर किसलिए करेगा ?

इसका जवाब पाने के लिए नेता को जरा नजदीक से देखना होगा। वह जन-सेवा की प्रतिज्ञा के बाद जिधर मुँह घुमाकर खड़ा हो जाता है उधर एक नम्बर सफरदरजंग रोड हुआ करता है। जन-सेवा का इससे अच्छा साधन और कोई नहीं है। जन-सेवा करनी हैं तो सफदरजंग रोड सँभालो। वह सँभल जाए तो सिद्ध हो जाता है।

मगर वह सिद्ध हो कैसे ? चुनाव में साठ पार्टियों के पचास सदस्य जीत कर आते हैं और हर जीतने वाला सफदरजंग रोड की तरफ मुँह करके बैठ जाता है। फिर वहीं बैठा रहता है। भीतर जाने का मौका ही नहीं आता।

कृष्ण भगवान् मक्खन बहुत खाते थे। उनकी माँ मक्खन छींके से लटका देती थीं। तब कृष्ण अपने दोस्तों को एक-दूसरे के कन्धे पर चढ़ाकर सबसे ऊपर खुद चढ़ जाते थे और मक्खन खा जाते थे। सफदरजंग रोड कुछ वैसी ही चीज है। अकेले कितनी भी उछल-कूद करो, हाथ नहीं आएगा। मक्खन हाथ आने के लिए साथियों का कंधा चाहिए। मगर सवाल यह है कि कंधे पर लादे कौन ? बस चले तो साथी ठीक तब अपना कंधा खींच लें जब हाथ छींके तक पहुँचने ही वाला हो।

इसीलिए एका जरूरी है। छींके तक पहुँचना है और मक्खन खाना है। एकता हो जाए तो सब हो जाए। 1977 में जनता ने ही छींके तक पहुँचा दिया था, लेकिन मोरारजी भाई को सादा मक्खन पसन्द नहीं आया। मक्खन की हाँडी से उन्होंने कांति देसाई को लटका दिया और खुद बाथरूम चले गए। चौधरी को यह भ्रष्टाचार बहुत बुरा लगा। उन्होंने हाँडी उतारी और जमीन पर दे मारी। अब वहाँ खाली छींका टँगा है और नजरें लगी हुई हैं। एकता का प्रयास जारी है। इस बार जनता को ज्यादा बड़ी जिम्मेदारी निभानी है। हाँडी भी खोलनी है और उसमें मक्खन भी भरना है। और कंधे पर लादकर ऊपर पहुँचना है, एक को नहीं सबको। जनता से सहयोग की जोरदार अपील इसीलिए मथुरादास भी कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान

इस देश में उत्तर प्रदेश एक ऐसा प्रदेश है जिसके अपने कीर्तिमान हैं। कीर्तिमानों की गिनेस बुक तब तक अधूरी रहेगी जब तक उसमें यह प्रदेश शामिल नहीं किया जाता। इस प्रदेश को दरअसल कीर्तिमानों का पुंज कहा जाना चाहिए। इस पुंज में अभी एक कीर्तिमान और जुड़ा। एक रेलगाड़ी में डकैती पड़ी और डकैतों ने मन्त्री सहित उन विधायकों को भी लूटा जो उसमें सफर कर रहे थे।

किसी समय इसी प्रदेश में छविराम नाम के एक महापुरुष हुए थे। जब वे डकैती डालने आते थे तो लोग नारा लगाते थे—नेताजी जिन्दाबाद। वे सफेद खादी के कपड़े पहनते थे। और गले में फूलमाला डलवाते थे। चारों ओर घूमकर जनता को नमस्कार भी करते थे। इसके बाद मनोहारी कार्बाइनों और राइफलों से उत्तम ध्वनि करते हुए बहुमूल्य गोलियाँ छोड़कर लूटपाट का आनन्द उठाते हुए वापस चले जाते थे।

यह वही महान प्रदेश है, जहाँ एक बार एक दारोगा ने अपने रोजनामचे में यह सुखद रपट दर्ज की थी कि उसके इलाके में अब मवेशियों की चोरियाँ कम हो गई हैं क्योंकि मवेशियों का शातिर चोर "बसिलसिलए वजारत आजकल जिला लखनऊ में मुकीम है।" (मन्त्री होकर लखनऊ में रह रहा है।)

मवेशी चुराते आदमी मन्त्री बन गया तो दारोगा ने इत्मीनान की साँस ली। मन्त्री हुआ है तो अपने चुनाव क्षेत्र में नहीं रहेगा, राजधानी चला जाएगा। होता ही यही है। चुनाव पूरा हो जाए तो आदमी का चुनाव क्षेत्र में काम भी पूरा हो जाता है। चुनाव क्षेत्र में कितने मवेशी होंगे ? मन्त्री होकर तो पूरा प्रदेश प्राप्त होता है।

एक बार शोर मचा कि विधानसभा में सैकड़ों विधायक हिस्ट्रीशीटर